सजल श्रद्धा–प्रखर प्रज्ञा

श्रद्धा अर्थात् श्रेष्ठता से असीम प्यार, अटूट अपनत्व। यह पानी की तरह सरल होती है। पानी पर कितने भी प्रहार किए जाएँ, वह कटता–टूटता नहीं है। पानी से टकराने वाला उसे तोड़ नहीं पाता, उसी में समा जाता है। श्रद्धा की यही विशेषता उसे अमोध प्रभाव क्षमता वाली बना देती है।

प्रज्ञा अर्थात् जानने, समझने, अनुभव करने की उत्कृष्ट क्षमता, दूरदर्शी विवेकशीलता, प्रखरता इसकी विशेषता है। प्रखरता की गति अबाध होती है। प्रखर प्रज्ञा हजारों अवरोधों–भ्रमों को चीरती हुई यथार्थ तक पहुँचने एवं बुद्धि के उत्कृष्टतम नियोजन में सफल होती है।

सजल श्रद्धा–प्रखर प्रज्ञा गायत्री तीर्थ–शांतिकुंज विशेषता है। ऋषियों, अवतारी सत्ताओं के प्रभावों से यह दोनों धाराएँ जहाँ सघन–सबल हो जाती हैं, वहीं तीर्थ विकसित और प्रतिष्ठत हो जाते हैं। गायत्री तीर्थ–शांतिकुंज को युगतीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित करने का भी यही मूल आधार है।

युगतीर्थ के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा की वास्तविक पहचान उनके शरीर नहीं, उनके द्वारा प्रवाहित प्रखर प्रज्ञा–सजल श्रद्धा की सशक्त धाराएँ रहीं हैं। इसीलिए उनके स्मृति चिह्नों के रूप में उनकी स्थूल काया की मूर्तियाँ नहीं, उनके सूक्ष्म तात्विक प्रतीकों के रूप में उन स्मृति चिह्नों को स्थापित किया गया है। वे जीवन भर दो शरीर–एक प्राण रहे, इसीलिए उनके शरीर का अन्तिम संस्कार एक ही स्थान पर, उनके तात्त्विक प्रतीकों के समक्ष सम्पन्न कर उसी स्थल को उनके संयुक्त समाधि स्थल का रूप दे दिया गया। तीर्थ चेतना के इन प्रतीकों पर अपनी श्रद्धा समर्पित करके सभी श्रद्धालु सत्प्रयोजनों के लिए उनसे शक्ति, अनुदान, आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।